

## Padma Shri



### **PROF. SOM DATT BATTU**

Prof. Som Datt Battu is a renowned musicologist and composer.

2. Born on 11<sup>th</sup> April, 1938 in the family of musicians, Prof. Battu imbibed the rich musical tradition of the North Region at an early age. He started training under his father Pt. Ram Lai Battu of Shyam Chaurasi Gharana. He is a disciple of Pandit Kunj Lal Sharma of Gwalior Gharana and Prof. K.S. Chakravarty of Punjab Gharana. He also had a privilege to learn under the tutelage of Pt. Kundan Lal Sharma, disciple of Ustad Ashiq Ali Khan Saheb of Patiala Gharana. He has dedicated his entire life to music starting from the age of 5 years. He taught classical music in different colleges/Universities and other institutes for more than 40 years and at the age of 86 he still continues training his disciples world over.

3. In the world of Indian music, Prof. Battu's legacy is always assessed by his role as a guru. As a musician trained by three gharanas, he has disseminated his repertoire freely, a passionate Guru who has guided countless 'shishyas' on the true path of music, without having ever charged a penny for the lessons imparted to his disciples. He always considered his Government salary and pension thereafter as adequate and never considered music lessons as 'tuitions' but looked upon them as 'Gyan- Daan' to his disciples. A true flag-bearer of our ancient musical traditions. He has compiled a priceless collection of traditional classical bandishes in the Punjabi language which has been published by the Punjabi University Patiala.

4. As a composer, Prof. Battu received the H.P. State Police Award for composing Martial songs for Army, Navy, Air force, whose lyrics were composed by Late Sh. Aminuddin Ahmed Khan, former Governor of H.P. He composed the Martial Tune for the Corps of Signals which has been adopted as its Core song abandoning the old British Tune. The lyrics have been composed by Anand Bakshi, renowned film lyricist.

5. Prof. Battu's achievements in the field of music as a writer have been recognized by Indian Institute of Advanced Studies, Shimla, which brought out a book on music in the year 1992, titled 'Man and Music in India'. In this volume, papers by top ten musicologists of the country were selected for publication and his work was included among those ten. Indian Institute of Advanced Studies, Shimla organized a seminar on modern trends in various fields of humanities where he had the opportunity to present a paper on 'Modern trend in Music' which was thereafter published by the Indian Institute of Advance Studies. He has showcased our music abroad through ICCR, performed for AIR and stage concerts for over 50 years.

6. Prof. Battu has been honoured with several awards over the years for his contribution in the field of folk and classical music, including the Sangeet Kala Ratna conferred by the All India Hindu Vishwa Dharma Sammelan in 1975; The Dr. Yashwant Singh Parmar Award conferred by Sirmour Kala Sangam, Himachal Pradesh in 2001; The Lifetime Achievement Award conferred by Punjabi Academy, Government of Delhi in 2012; The Sangeet Martand Award conferred by Arvind Kala Kendra in 2014; The Sardar Sohan Singh Samriti Award conferred by Punjabi University, Patiala in 2014, Akashvani Sangeet Sammelan Award in 2014 for being the senior most artiste of repute since 1955, the Punjab Sangeet Rattan Award in 2015, the Himachal Gaurav Puraskar in 2016 and the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2018.

## पद्म श्री



### प्रो. सोम दत्त बट्टू

प्रो. सोम दत्त बट्टू एक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ और संगीतकार हैं।

- 11 अप्रैल, 1938 को संगीतकार परिवार में जन्मे, प्रो. बट्टू ने कम उम्र में ही उत्तर भारत की समृद्ध संगीत परंपरा को आत्मसात कर लिया था। उन्होंने श्याम चौरासी घराने के अपने पिता पं. राम लाल बट्टू के सान्निध्य में प्रशिक्षण शुरू किया। वह ग्वालियर घराने के पं. कुंज लाल शर्मा और पंजाब घराने के प्रो. के.एस. चक्रवर्ती के शिष्य हैं। उन्हें पटियाला घराने के उस्ताद आशिक अली खान साहब के शिष्य पं. कुंदन लाल शर्मा की छत्रछाया में सीखने का सौभाग्य भी मिला। उन्होंने 5 साल की उम्र से ही अपना पूरा जीवन संगीत के लिए समर्पित कर दिया है। उन्होंने 40 से अधिक वर्षों तक विभिन्न महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों में शास्त्रीय संगीत सिखाया और 86 वर्ष की आयु में वह आज भी दुनिया भर में अपने शिष्यों को प्रशिक्षण दे रहे हैं।
- भारतीय संगीत की दुनिया में, प्रो. बट्टू की विरासत को हमेशा एक गुरु के रूप में उनकी भूमिका से आंका जाता है। तीन घरानों से प्रशिक्षित संगीतकार के रूप में, उन्होंने अपने गीत-संगीत को स्वतंत्र रूप से लोगों तक पहुंचाया है, वह एक ऐसे उत्साही गुरु हैं जिन्होंने संगीत के सही मार्ग पर अनगिनत 'शिष्यों' का मार्गदर्शन किया है और संगीत शिक्षा के लिए अपने शिष्यों से कभी कोई पैसा नहीं लिया। उन्होंने हमेशा अपने सरकारी वेतन और उसके बाद पेंशन को पर्याप्त माना और संगीत की शिक्षा को कभी भी 'ट्यूशन' के रूप में नहीं माना, बल्कि अपने शिष्यों के लिए संगीत को 'ज्ञान-दान' माना। वह हमारी प्राचीन संगीत परंपराओं के सच्चे ध्वजवाहक हैं। उन्होंने पंजाबी भाषा में पारंपरिक शास्त्रीय बंदिशों का एक अनमोल संग्रह संकलित किया है जिसे पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला ने प्रकाशित किया है।
- संगीतकार के रूप में, प्रो. बट्टू को थल सेना, नौसेना, वायु सेना के लिए जोश से भरे युद्ध गीतों की रचना के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य पुलिस पुरस्कार मिला, जिसके बोल हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल स्वर्गीय श्री अमीनुद्दीन अहमद खान ने लिखे थे। उन्होंने कोर ऑफ सिग्नल के लिए मार्शल ट्यून की रचना की, जिसे पुरानी ब्रिटिश ट्यून को बदलकर इसके कोर गीत के रूप में अपनाया गया है। गाने के बोल मशहूर गीतकार आनंद बख्शी ने लिखे हैं।
- एक लेखक के रूप में संगीत के क्षेत्र में प्रो. बट्टू की उपलब्धियों को भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा सम्मान दिया गया है, जिसने वर्ष 1992 में संगीत पर एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसका शीर्षक था 'मैन एंड म्यूजिक इन इंडिया'। इस पुस्तक में, देश के शीर्ष दस संगीतकारों के लेखों को प्रकाशन के लिए चुना गया था और उनके काम को उन दस में शामिल किया गया था। भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला ने मानविकी के विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक रुझानों पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया, जहां उन्हें 'संगीत में आधुनिक प्रवृत्ति' पर अपना पेपर प्रस्तुत करने का अवसर मिला, जिसे बाद में भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान द्वारा प्रकाशित किया गया। उन्होंने आईसीसीआर के माध्यम से विदेशों में हमारा संगीत पहुंचाया है, 50 से अधिक वर्षों तक आकाशवाणी के लिए और स्टेज कॉन्सर्ट में संगीत कार्यक्रमों का मंचन किया है।
- प्रो. बट्टू को वर्षों से लोक और शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें वर्ष 1975 में अखिल भारतीय हिंदू विश्व धर्म सम्मेलन का संगीत कला रत्न; वर्ष 2001 में सिरमौर कला संगम, हिमाचल प्रदेश का डॉ. यशवंत सिंह परमार पुरस्कार; वर्ष 2012 में पंजाबी अकादमी, दिल्ली सरकार का लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड; वर्ष 2014 में अरविंद कला केंद्र का संगीत मार्तंड पुरस्कार; वर्ष 2014 में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला का सरदार सोहन सिंह स्मृति पुरस्कार, 1955 से ख्याति प्राप्त सबसे वरिष्ठ कलाकार के रूप में वर्ष 2014 में आकाशवाणी संगीत सम्मेलन पुरस्कार, वर्ष 2015 में पंजाब संगीत रत्न पुरस्कार, वर्ष 2016 में हिमाचल गौरव पुरस्कार और वर्ष 2018 के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी शामिल हैं।